



प्राचीन भारतीय मूर्तिकला

 drishtiias.com/hindi/printpdf/prachin-bhartiya-murtikala

गुप्तकालीन मूर्तिकला

- गुप्तकाल के साथ-साथ भारत ने मूर्तिकला के उत्कृष्ट काल में प्रवेश किया। शताव्दियों के प्रयास से कला की तकनीकों को संपूर्णता मिली, निश्चित शैलियों का विकास हुआ और मूर्तिकला ने ब्रह्मासिकी के स्तर को प्राप्त किया।
- गुप्तकालीन मूर्तिकला अमरावती और मथुरा की प्रारंभिक उत्कृष्ट मूर्तिकला का एक तार्किक परिणाम है।
- ब्राह्मण (हिन्दू), जैन और बौद्ध देवताओं के प्रतिमा-विज्ञान के मानदंडों को सटीक बनाया गया तथा उनका मानकीकरण किया गया जिसने परवर्ती युगों के लिये आदर्श नमूने प्रस्तुत किये।
- सारानाथ, मथुरा और पाटलिपुत्र गुप्तकालीन मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्र थे।
- गुप्तकालीन मूर्तियों की निर्मलता, अंग सौंदर्य वास्तविक हाव-भाव एवं जीवनता ने कला को ऊँचाई प्रदान की। गुप्तकाल में मूर्तियाँ मिट्टी, पाषाण तथा धातु तीनों से निर्मित की जाती थीं।
- गुप्तकाल में हिन्दू धर्म का प्रभाव अधिक बढ़ा इसलिये इसका प्रभाव कला के विभिन्न रूपों पर भी देखने को मिलता है। दशावतार से संबंधित मूर्तियाँ, त्रिदेव से संबंधित मूर्तियाँ इसका प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। यहाँ तक की जैन तीर्थकर के बगल में इंद्र, सूर्य, कुबेर आदि की मूर्तियाँ बनने लागी।
- इस काल की मूर्तियों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं- सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की ताप्तमूर्ति, देवगढ़ की शोपशायी विष्णु मूर्ति, सारनाथ से प्राप्त धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा, उदयगिरी से प्राप्त वराह अवतार मूर्ति, अहिच्छत्र से प्राप्त गंगा-यमना की आदमकद मूर्ति आदि।

भारतीय उपमहाद्वीप में मूर्तिकला का प्राचीनतम साक्ष्य उच्च पुराणाण काल से मिलता है। इसी काल से संबंधित बेलन धातों में लोहादानाल से अस्थि निर्मित मात्रदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है। तथापि भारतीय उपमहाद्वीप में मूर्तिकला अपने वास्तविक रूप में हड्ड्या सभ्यता के दैरान ही अस्तित्व में आई।

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला

मौर्योंतरकालीन मूर्तिकला

- भारतीय मूर्तिकला के संदर्भ में यह काल 'मौर्य का पत्थर' है।
- मौर्योंतर काल में विशिष्ट व्यवस्थित मूर्तिकला शैली का विकास हुआ। इस काल में मूर्तिकला की तीन प्रमुख शैलियाँ थीं- गाधार शैली, मथुरा शैली और अमरावती शैली।
- मूर्तिकला के निर्माण की प्रमुख विषय वस्तु बौद्ध धर्म रहा। बुद्ध की विभिन्न मूर्तियों का निर्माण प्रमुखता से हुआ। तथापि कुछ जैन तीर्थकरों की मूर्तियों का निर्माण भी इस काल में हुआ।
- इस युग में कला को शासकों के संरक्षण के साथ-साथ धनी व्यापारियों का भी संरक्षण प्राप्त हुआ।
- कला के विभिन्न रूपों पर स्थानीय व विदेशी तत्त्वों दोनों का प्रभाव पड़ा।

हड्ड्या मूर्तिकला

- हड्ड्या सभ्यता के विभिन्न स्थलों से बड़े पैमाने पर मूर्तियों की प्राप्ति हुई है। हड्ड्या स्थलों से मृण्मूर्ति, प्रस्तर मूर्ति तथा धातु मूर्ति तीनों प्रकार की मूर्तियाँ प्राप्त हुईं।

मौर्यकालीन मूर्तिकला

- मौर्यकालीन मूर्तिकला का प्रमाण साहित्यिक व पुरातात्विक दोनों स्रोतों से प्राप्त होता है। अशोक के स्तंभों पर निर्मित पशु आकृतियाँ राजकीय मूर्तिकला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं जबकि यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ लोक मूर्तिकला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।
- मौर्यकालीन मूर्तियों में पत्थर व मिट्टी की मूर्तियाँ शामिल हैं परंतु धातु की नहीं।
- इस काल की मूर्तियों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं- रामपुरवा का नटुवा बैल, सारनाथ का सिंह स्तंभ, धौली का हाथी, दीदारगंज की यक्षिणी आदि।